Vol 5 Issue 12 June 2016 ISSN No :2231-5063

# International Multidisciplinary Research Journal

# Golden Research Thoughts

Chief Editor
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor
Dr.Rajani Dalvi

Honorary
Mr.Ashok Yakkaldevi

**Welcome to GRT**

**RNI MAHMUL/2011/38595** **ISSN No.2231-5063**

Golden Research Thoughts Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

## Regional Editor

Dr. T. Manichander
Ph.d Research Scholar, Faculty of Education IASE, Osmania University, Hyderabad

## *International Advisory Board*

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

.....More

## *Editorial Board*

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

**Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India**
**Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.aygrt.isrj.org**

ISSN: 2231-5063 Impact Factor : 3.4052(UIF) Volume - 5 | Issue - 12 | June - 2016

Golden Research Thoughts

# उत्क्रांन्ति युग : इतिहास के पूर्व का काल ' 'प्रागैतिहासिक काल की संस्कृति की पावन–बेला में''

डॉ. प्रो. चन्द्रिकासिंह सी. सोमवंशी
Ph.D., M.R.P./ M.R.P.(UGC), Research Scholar,Reconginsed Ph-D- Guide/
Research Supervisor in Hindi/History/Sociology & Geography,D. Litt. Degree
Completed (A.I.H.C.S.),Adipur (kutch)

Co - Author Details :

डॉ. प्रो. अर्चना पी. उपाध्याय[2],
[2]एम.एस.सी, पी.एच. डी. , अध्यक्ष : माइक्रोबायोलाजी विभाग, तोलाणी कॉलेज ऑफ आर्टस एन्ड सायन्स, आदीपुर – कच्छ (गुजरात).

Professor Madhavi Sharma[3]
[3]M.Sc.:M.Phil., B.Ed. Lecture in Chemistry A chipure (kutch), Gujarat.

## कच्छ की प्रागैतिहासिक युग एवं अद्यौतिहासिक युग : एक सिहांवलोकन

1.पूर्व–पाषाण–कालीन संस्कृतियॉः (Paleolithic Cultures)
2.उत्तर–पाषाण–कालीन संस्कृतियॉः (Neolithic Cultures)
3.लघु–पाषाण अर्थात् मध्य–पाषाण युगीन संस्कृतियॉः (Microlithic Cultures)
4.चित्रित–गहवर (Megalithic Remains)
5.बृहत्–पाषाण–कालीन–शव–स्थानः(Megalitic Remains)

### 1. पूर्व–पाषाण–कालीन संस्कृतियॉ :–

कच्छ प्रदेश के पुरातत्व का आरम्भ प्रागैतिहासिक तथा पृथ्वी पर मानव अविर्भाव के काल से ही मानना चाहिए। अपनी आदिम्–अवस्था में मनुष्य और असभ्य बन्य–जन में कुछ खास अन्तर न था। आदिम मानव शुरू आती दिनों मे सिर्फ नंगे घूमा करता था, उसे नैतिकता का जरा सा भी ज्ञान न था। जंगलो, खोंह–खन्दराओं, गुफाओं, नदियो के तलहटियों में घूमा (बिचारण) करता था। कच्चे मास खाता था। चौपये के समान चलता था और गड्डों में भरे हुए गन्दे पानी को पीता था। समय के साथ ही साथ उसमें भी परिवर्तन आया और अ बवह पत्थर से आखेट यानि शिकार करने लगा और कन्दमूल–फल खाकर अपना जीवन निर्वाह करने लगा। वह पूर्व–पाषाण–काल में पत्थर से आखेट यानि शिकार करने लगा और कन्दमूल–फल खाकर अपना जीवन निर्वाह करने लगा। वह पूर्व–पाषाण–काल में पत्थर के भद्दे औजार बनाता था, जिनका निर्माण नदियों में प्राप्त पत्थरों के टुकड़े कर, उन्हें उपयुक्त आकृति देकर किया जाता था। कच्छ में भी कुछ पूर्व–पाषाण काल के औजार पाये गये हैं। नखत्राणा तहसील में मोरई नदी के किनारे–किनारे पर स्थित देसलपुर गॉव में भी काफी मात्रा में पूर्व पाषाण काल की संस्कृति के अवशेष पाये गये हैं जिन्हें हम पेलोलिथिक युग–संस्कृति (Palaeolitic Age Cultures) के नाम पुकार सकते हैं। देसलपुर, पबुमठ और सुरकोटडा जैसे जगहों पर पूर्व–पाषाण–कालीन संस्कृति के अपशेष मिलें है। प्रागैतिहासिक काल के मनुष्य की प्रारिम्भक खाद्य–पदार्थ–अर्जन की अवस्था को हम दो भागों में बाट सकते हैः–

1.पूर्व–पाषाण–काल (Old Stone Age)

2.उत्तर–पाषाण–काल (New Stone Age)

मनुष्य के विकाश को इन स्थितियों के बीच बहुत समय का व्यवधान रहा होगा। लगभग डेढ़ लाख वर्ष पूर्व पृथ्वी पर मनुष्य के अवतरित होने से पन्द्रह हजार वर्षो के बाद उसके अस्त्र निर्माण करने का अनुमान किया जाता है। पूर्व पाषाण–काल के हाथियार, जो प्राचीन पाषाणयुगीन–अस्त्र (Palaeolithic Implement) कहलाते है। कच्छ के सुकोटडा और देसलपर की संस्कृति में देखने को मिलते हैं। गुजरात के लोथल में भी पूर्व पाषाण–कालीन–संस्कृतियों से सम्बन्धित पाषाण–युगीन अस्त्र, सोमनाथ, लोथल, रंगपुर एवं सिन्धु खेड के नगरों में तथा सौराष्ट्र आदि में देखने को मिलते है। हाथ की कुल्हाडी (Hand Axe) इस युग का विशेष हाथियार था। इसे एक पत्थरके टुकड़े को नुकीला करके बनाया जाता था। पूर्व–पाषाण–काल के मनुष्य का आधिकांश जीवन, उन परिस्थितियों पर निर्भर था, जिनमें वह रहता था, जीता था। उसके हाथियार ज्यादातर नदियों की तलहटियों घाटियों आदि में किया गया। हाथ से फेंके जाने वाले पत्थर के हथियार कच्छ में काफी मात्रा में शिकारपूर के उत्खनन में पाये गये हैं।

### *2. उत्तर–पाषाण–कालीन संस्कृतियॉ :–*

पूर्व–पाषाण–कालीन संस्कृतियों एवं उत्तर–पाषाण–कालीन संस्कृतियों से सम्बन्धित काफी स्थल कच्छ की पावन–भूमि में माधापर, कुकमा, ध्रांग, कोटाय, शिकारपुर की पहाडियों एवं तलहटियों में मिलते हैं। ''कच्छ के ऐतिहासक एवं सांस्कृतिक अध्ययन हमें आकाश पुन्ज की तरह रास्ता (मार्ग) भूले हुए लोगों को राह दिखाता है और मशाल की तरह जलकर पृथ्वी पर प्रकाश फैला कर, यहॉ की आदिम्–संस्कृति एवं सभ्यता को उजागर करता है।'' कच्छ की पावन भूमि में आदिम्–मानव काफी समय तक भटका हो गा, वह नखत्राणा तहसील के मोरई नदी के किनारों पर खास कर देसलपर, ध्रांग, कुकमा, कुरून, सुरकोटडा और खडीर प्रदेश के घोलावीरा, तक भटका होगा। कालान्तर में सभ्यता एक मन्जिल और आगे बढ़ी और बर्बरता का एक पाया टूट गया। हाथियार अभी भी पत्थर के ही थें, किन्तु औजार अनघडे पत्थर ही थे, लेकिन यहॉ तक आते–आते उनके धार तेज होने लगे और पत्थर ही थे, लेकिन यहॉ तक आते–आते उनके धार तेज होने लगे और पत्थरों में चमक आने लगी। इन हाथियारों पर एक प्रकार की पालिश भी की जाने लगी। इन हथियारों पर एक प्रकार की पालिश भी की जाने लगी थी। यह उत्तर–प्रस्तर–युगीन मानव की सभ्यता थी। उनके हाथ के हथियार भी विभिन्न प्रकार के होने लगे थे।'' गुफाओं के अतिरिक्त उस काल के मनुष्य सब अपने लिए आश्रय बना कर रहने लगे थे। इनकी झोपड़ियॉ घास–फूस की बनती थी, जिन्हें फूस से छा कर मिट्टी से लेप कर देते थे। इस युग तक आते–आते अग्नि का आविष्कार करना मानव सीख गया था और अपने आहार को भून (रॉध) कर कर्म करने लग गये थे। गुजरात के अहमदावाद के नजदिक 'प्यॉगलाज' के पास मिला हुआ कच्छ प्रदेश का आदिम्–मानव के वस्ती के मानवीं औजारों के प्रमाण भी मिले हैं। ऐसा मानने में आता है कि ईसा से कम से कम 5000 (पॉच हजार) वर्ष पूर्व कच्छ का आदिम्–मानव खुद के औजारों के साथ पत्थरों को गढता, उनसे घास काटता, प्राथमिक कक्षा की खेती करता और जीवन आजीविका के साधन जुटाता था। ऐसे कितने विकाश–क्रम की कड़ियों की प्रारिम्भक अवस्था आदिम्–मानवों की वस्ती के संकेत मिलते हैं। 'शिकारपुर के उत्खनन' हाथ से फेंके जाने वाले पत्थर के काफी हथियार प्राप्त हुए हैं, जो कि भुज के 'म्यूजियम' में रखे हुए हैं। धोलावीरा में तो आदिम्–मानवों के पॉव (पैर) के चिन्ह के भी निशान मिलें है। कच्छ के भौगोलिक उथल–पुथल होने के कारणों से आज आदिम्–मानवों के अवशेष तथा हथियारों के अवशेष मिलने में कठिनाइयॉ हो रही है। उत्तर–पाषाण–युग का विशेष हथियार मध्य प्रदेश के राजनॉद–गॉव में अर्जुनी के पास ''बोन'' टीला से एक छेद किया हुआ पत्थर का कराघातक हथौड़ा (Perforated Hammer Stone) प्राप्त हुआ है जो कि इस संस्कृति का एक मिशाल है।'' अनुमानतः ईसा से कम से कम 5000 (पॉच हजार) वर्ष से भी और पहिले के हो सकते हैं।श्री मनोहरलाल मिश्र जी ने होशंगाबाद से उत्तर–पाषाण–कालीन हाथियारों (Celts) को खोज निकाला हैं।

उत्तर–पाषाण–युग (Neolithic Age) का मनुष्य अपने मृतकों को दफ़नाता भी था, फिर उन पर समाधि बनाता था। इस बात की पृष्ठि गुजरात के लोथल और धोलावीरा तथा कुरून में दफ़नाये हुए नर–कंकालों की पृष्टि से होता है। उत्तर–प्रदेश के मिरजापुर से मिले कुछ प्रागैतिहासिक कालीन अस्ति पन्जरों से यह साबित हो चुका है कि वे शवों को दफ़नाने के साथ–साथ शवों को जलाने की प्रथा भी कोई अनजानी न थी। उनका विश्वास था कि चट्टानों और वृक्षों में देवताओं का वास रहता है। यही कारण है कि वे प्रकृति की आत्माओं को पूजते थे, उन्हें प्रसन्न करने के लिए जीवों की बली भी चढ़ाते थे। पूर्व–पाषाण–कालीन और उत्तर–पाषाण–कालीन संस्कृति के अवशेष सम्पूर्ण भारतवर्ष के कोने–कोने में विशेषकर बेल्लारी, सालेम, करनूल, मद्रास और मध्य–प्रदेश, उत्तर–प्रदेश, गुजरात के लोथल, कच्छ व काठियावाड़ प्रदेश में मिलते हैं।

### *3.लधु–पाषाण–कालीन–अस्त्र (मध्य–पाशाण–युग)* (Microlithoc Cultures)

उत्तर–पाषण युग में तत्कालीन मानव के द्वारा प्रयुक्त विविध आकार के असंख्यक हाथियारों से उनकी नव रचना शैली की वास्तविकता का पता चलता है। ये अस्त्र थोड़ी ही संख्या में मिले हैं। चाकू के फल के आकार वाले लम्बे अस्त्र (Long blades), बाण–फलक (Arrow-heads) और छेद करने के अस्त्र या छिद्र करने का शस्त्र (Burins) इत्यादी हथियार स्थानीय पत्थर जैसे अकीक (Agate), गोमेद(Camelian), गार (Quartz) और दूसरे सफेद पत्थर (Chalcedony) से बनाये जाते थे। इन हथियारों के सम्बन्ध में एक आम धारणा यह है कि वे जहॉ बनते थे, काफी बड़ी मात्रा में मिलते हैं। छिट–पुट रूप में कच्छ प्रदेश के कई पुरातत्विक स्थलों में से भी लधु–पाषाण–कालीन हथियार प्राप्त हुए हैं जैसे कि निखत्राणा तहसील में देसलपुर, गुन्तली, कोटड़ा और टोडिआ तथा अन्जार तहसील के मोगारकोटड़ा–पीरवालां खेत में, कुरून गॉव के आस–पास, रापर पन्थक के केरासी, लाखापर, पावुमद और सुरकोटड़ा, शिकारपुर तथा धोलावीरा, कानमेर ध्रॉग कि तलहटी आदि–आदि।

### *4.चित्रित–गहवर* (Rock Shelters with Paintings)

कच्छ प्रदेश में माण्डवी के पास की चटटानें, छोटी–छोटी गुफनओं के बनाने के लिए अधिक उपर्युक्त है। माण्डवी की सियोत की गुफाएँ इतिहास प्रसिध्द है। प्रागैतिहासिक काल में, आदिम्–मानव स्वभावतः ऐसी ही गुफाओं में आश्रय ग्रहण करता था। यह कभी–कभी प्राकृतिक गहवरों में और कभी–कभी जमीन को खोदकर बनायी गयी गुफाओं में आश्रय ग्रहण किया करता था और बहुघा कुछ कार्य न कर सकनें पर अपने आराम करने के समय प रवह टिकाश्रयभूता गुफाओ में कभी तो अपने आराम करने के समय प रवह टिकाश्रयभूता गुफाओ में कभी तो अपने देखे हुए प्राकृतिक दृष्यों और कभी भ्रम बश काल्पनिक–चित्रों को अपनी गुफाओं में चित्रित किया करता था। माण्डवी के पास सियोत की गुफा में भी काफी सम्भव है कि इनमें चित्रीत गहवरों अर्थात रॉक शेल्टर्स पाये जाते हैं। धोलावीरा में तो आदिम्–मानव के पैर के चिन्ह के निशान (नमूने) पाये गये है।'' पर्वत माला धीर्णोघर नदी के सपाटी तटों, ध्राणेटी, ध्रॉग, कोटाय की पहडियॉ और आस–पास की पर्वत मालाओं की तलहटियों में भी आदिम्–मानवों के रॉक–शेल्टर्स देखे जा सकते हैं। प्रागैतिहासिकता से सम्बन्धित कोई भी ऐसी चीज नहीं है कि कच्छ में न मिनी हों। कच्छ का भुस्तरीय विकाश–कम का इतिहास जाकि करोड़ो वर्षो पुराना है सोचने के लिए मजबूर कर देता है। पेन्टिग के चित्र भी कच्छ में भरे पड़े हैं। कच्छ पहाड़ियों वाला प्रदेश है। प्रकृति ने उसे छोटी–छोटी पहाड़ियों से समाया एवं सॅवारा है। पच्छम, खड़ीर, प्रांथाल, चोराड, पच्छमाई, धोली, नीलवो और काली पहाड़ी (द्रत्तादेय भगवान का मन्दिर) प्रमुख हैं। जिनमें काफी चित्रित गहवर पाये जाते हैं।

### *5. बृहत–पाषाण–कालीन शव–स्थान* (Megalithic Remains) :-

भारतीय पुरातत्व के अनुशीलन में बृहत–पाषाण–काल–शव का महत्व बहुत माइने रखते हैं। इन शव–स्थानों में प्रायः लोहे और ब्रांज के हाथियार प्राप्त होते रहे है, जिससे ऐसा पता चलता है कि विशालकास चट्टानों के द्वारा बृहदवास के लिए बनाये गये थे। इन कब्रों पर छत डालने के लिए चारों तरफ खडे किए हुए प्रस्तर–शिला–खण्ड होते थे और छत के रूप में पत्थर का एक विशाल खण्ड रख दिया जाता था। शवों को एक काठ के बने हुए बख्से में रखा जाता था, जिसका आकार आयताकार चौकी के समान होता था। शव के पास कुछ मृत–पात्र लोहे के हथियार (Megklithic Romains) और बाकी की बहुत सी चीजें प्रेत आत्मओं से सम्बन्धित वस्तुएँ रखी जाती थी। वैसे देखा जाय तो आदिम्–मानवों के नर–कंकाल मोहेनजोदड़ो और हडप्पा के खण्डहरों में मिलें हैं। गुजरात के कच्छ के कुरून गॉव अर्थात शहीद गढ में बृहत्–पाषाण–कालीन–शव स्थान मिले हैं। यह कब्रस्तान अपने–आप में बे–मिसाल है। लोथल जो कि अहमदाबाद जिले में हैं उसे एक शव स्थान मिला है। जिसकी प्रतिछाया (चित्र) हम दें रहे हैं। महेसाण में, और लोथल में कितने नर–कंकाल पाये गये हैं। सुरेन्द्रनगर जिले के लिमड़ी तहसील के रंगपुर, राजकोट जिले के रोजड़ी (श्रीनाथगढ़) के भादरनदी के किनारों पर तथा नखत्राण तहसील जो कि कच्छ जिले के पश्चिमी छोर पर स्थित है, के मोरई नदी के किनारों पर भी आदिम्–मानवों के पश्चिमी छोर पर स्थित है, के मोरई नदी के किनारों पर भी आदिम्–मानवों के अपशेष देखने को मिले हैं। ध्रॉग की गोलाई लिए हुए पहाड़ियों की यदि खुदाई करवायी जाते तो (Megolithic Remains), से सम्बन्धित काफी शव (कंकाल) बरामद हो सकते हैं। डॉ. मोरेश्वर गं. दिक्षित जी ने प्राचीन भारत और खास कर मध्य–प्रदेश के प्रागैतिहासिकता पर नवीन प्रकाश डाला है जो कि एक मिशाल है। कच्छ–प्रदेश से प्राप्त पूर्व–पाषाण–काल, उत्तर–पाषाण–काल, लधु–पाषाण–काल, चित्रित–गहर और बृहत्–पाषाण–कालीन युग के काफी हथियारों में से जैसे कि हाथ की कुल्हाड़ी ऐशुलियन प्रकार के थे सुन्दर नमूने मिले हैं। इनमें से अधिकतर तो कच्छ म्युजियम की शोभा बढ़ा रहे हैं। चित्रित शैली के चिन्ह भी कच्छ के रबारियों के घरों, अलंकारों और वेश–भूषा में देखने को मिलते हैं। ये आकृतियॉ आभूषण नागला (कच्छी रबारी महिलायें शादी के समय कान में पहनती है। जिनकी तस्वीर हम दे रहे हैं।)

इतिहास के पूर्व के काल को हम ती प्रमुख विभागों में बॉट सकते हैं।
1.प्रागैतिहासिक काल (प्रीहिस्टोरिक ऐज) (Pre-Historic Age)
2.आद्यैतिहासिक काल (प्रोटो–हिस्टोरिक ऐज) (Proto-Historic Age)
3.ऐतिहासिक काल (हिस्टोरिक ऐज) (Historic Age)

1.प्रागैतिहासिक काल (प्रीहिस्टोरिक ऐज) (Pre-Historic Age)
1.प्रारिम्भक आदि–अश्ययुग (2,00,000 वर्ष से लेकर 1, 00,000 वर्ष पूर्व तक)
2.मध्य आदि–अश्मयुग (50,000 वर्ष से लेकर 20,000 वर्ष पूर्व तक)

### *3.अन्य आदि–अश्मयुग*

हिमालय पर्वतमालाओं ने उत्तरी मावन–समूहों को भारत के भीतर आने से सदैव रोका है। बड़ी–बड़ी पर्वत–मालाओं, एवं सागरों–समुद्रों ने आदिम्–मानवों के आगे बढ़ने में काफी उड़चने पैदा की हैं। कुछ पूर्वी समूहों को छोड़कर भारत में अधिकांश प्रवास पश्चिमी भारत के महासागरों, महानदियों के तलहटियों सें होता रहा है। यदि यह पर्वत–मालाएँ इतनी गहन न होती तो वर्तमान भारतीय मानव–समूह कुछ और ही होते। इसी प्रकार अफ्रीका में सहारा मरूस्थल तथा कांगो के भीषण बनों (जंगलो) ने सदैव ही एक प्रतिरोध उत्पन्न किया है तथा वहॉ पर अधिकांश प्रवास समुद्री तटों के किनारे–किनारे होते रहे है। महाद्विप के भीतर पश्चिमी वन–जन्तुओं का प्रवास भी सहारा के दक्षिण तथा कांगों के उत्तर के बीच की घासियारी–पट्टी तथा साधारण वनों के बीच से होता ही पूर्व की और आकर पुनःदक्षिण में फैला। सबसे प्रथम मानव जाति की उत्पति सर्व–प्रथम दक्षिणी अफ्रीका (South Africa) के धने जंगलों में हुआ, वहॉ से वह नदियों–सागरों के किनारे किनारे होता हुआ भारत वर्ष के पश्चिमी किनारे खास करके गुजरात के महानदी–साबरमती–नदी एवं कच्छ के धोलावीरा एवं मेतई नदी के

किनारों पर आगमन हुआ। जिसके नर कंकाल उत्खनन में मिले है। आदिम्–मानवों से पूर्व हजारो वर्षो पूर्व तक पृथ्वी पर दानवाकार (दैत्याकार) भयानक जीवों की अपनी एक अलग ही दुनिया थी, शायद तब मानव का अभिर्भाव ही नहीं हुआ था। डायनासोर जैसे प्राणियों के कंकाल हमें यह बताते हैं कि पृथ्वी पर कैसे–कैसे विशाल जीवों की सृष्टि थी, और उन्हीं के बीच में हीं मनुष्य का पूर्ववत् पूर्वज आदिम्–मानव प्रकृति की गोद में बैठकर उसके द्वार रची हुई दुनियॉ से अठखेलियॉ किया करता था। 19 करोड़ वर्ष पुराना डायनासोर के जीवाशम संशोधन–कारों की एक टुकड़ी (दल ने) 18 करोड़ वर्ष पुराना जिवाशम ढूँढ निकाला है। आज तक सबसे पुराना जीवाश्म डायनासोर जैसे जंगली विशालकाय जानवर का मिला है ऐसा माना जाता है। मोरक्को के ऊर्जा एवं खानमंत्री मान्नीय श्री मुहम्मद बाऊतालेबे ने बताया कि 30 (तीस) फुट लम्बा यह डायनासोर खुद की लम्बी–गरदन और पूँछ के कारण गेंड़ा जैसे आकार का लगता है। ये ऐटलस पर्वत के पास ताजोऊ गॉव में देखने को मिला था। श्री मुहम्मद बाऊतालेबे ने बताया कि 30 (तीस) फुट लम्बा यह डायनासोर खुद की लम्बी–गरदन और पूँछ के कारण गेंड़ा जैसे आकार का लगता है। ये ऐटलस पर्वत के पास ताजोऊड़ा गॉव में देखने को मिला था। श्री मुहम्मद बाऊतालेबे ने बताया कि यह विश्व का सबसे पुराना जीवश्म होने की जानकारी मिली है। अधिकारियों ने यह बताया कि इस डासयनासोर के नाम, जहॉ पर से यह प्राप्त कि यह विश्व का सबसे पुराना जीवश्म होने की जानकारी मिली है। अधिकारीयों ने यह बताया कि इस डायनासोर के नाम, जहॉ पर से यह प्राप्त हुआ है उस गॉव के नाम पर इसका नाम ''टाराऊडासामारोर नाओकी'' रखा गया है। डायनासोर का शिर, जबडा और शरीर के कितने भाग को बाहर निकाला जा सकता है। आज से लगभग कई वर्ष पूर्व हमने सन्देश न्यूज पेपर (दैनिक अखबार) में पढा था कि साउथ–आफ्रीका में सफेद हाथी उडते हुए पाये गये हैं, जिनके काफी लम्बे–लम्बे पंख थे। पौराणिक–गाथा में हमने पढ़ा कि देवराज इन्द्र के पास जो हाथी है वह सफेद रंग के है, किन्तु अखबारी न्युज पढ़ा था कि विहार के पहाड़ी इलाके में एक विशालकाय जानवर जो कि हाथी से भी विशाल प्राणी है उसका कंकाल मिला था। थोड़े समय पहले एक और दैनिक अखबार में पढ़ा था कि समुद्र मे एक ऐसा जीव मरा पाया गया है, जो कि समुद्र के लहरों के जोरदार थपेड़ों से किनारे पर आ लगा था, उसकी चमड़ी तीन इन्च से चार इन्च मोटी थी। ऐसे–ऐसे विचित्र प्राणियों के बीच में मनुष्य का पूर्वज आदिम्–मानव, जिनकी भुजाऍ शक्तिशाली थीं, गठिलां शरीर था एवं अठखेलियॉ करता था। प्रकृति की गोद में बैठ–बैठ वह प्रकृति के द्वारा दिये गये नजारों को ही देखा करता था। मानवशास्त्र, भूगर्भशास्त्र के धुंधराले पलों के साथ आदिम्–मानव ऑख–मिचौली का खेल अन्य और प्राणियों के साथ खेला करता था। सभ्यता का दायिरा बढ़ता रहा। सभ्यता किसान की कुटियां से निकल कर नगरों में ही फली–फूली। उसी तरह विकाश के पथ को छूता हुआ सभ्य मानव तक का एक लम्बा इतिहास तय किया। ''बची हुई हड्डियों को छीपा कर खाने वाला कुत्ता भाविष्य में खाने के लिए जमा करने वाली गिलहरी, छतें में शहद जमा करके रखने वाली मधु–मक्खी और बरसात के दिनों में काम आने के लिए खाने पीने की चीजे बटोर कर रखने वाली चिटियॉ ही सभ्यता की प्रथम रचियता हैं। कटफोडवा पक्षियों को पेडो की कोटरों में अनाज जमा करते हुए और मधु–मक्खियों को छत्ते में शहद जमा करते हुए देखकर मनुष्यने सोंचा होगा कि यह सब भोजन के लिए ही आवश्यक होगा।'' आदिम्–युगीन मानव ने मानव का मॉस खाने और जानवरों को मॉस खाने के बीच कोई नैतिक अन्तर नहीं स्वीकारा। मलेशिया नामक स्थान में उस सरदार का समाज की दृष्टी में बहुत की अच्छा मान बढ़ता था जो अपने आये हुए प्रिये–मित्रो को मनुष्य के भूने हुए मॉस से स्वागत करता था।

आदिम्–मानव के अवशेष जो कि प्रागैतिहासिक एवं आद्यैतिहासिक युग के हैं, गुजरात और कच्छ की महा–नदियों, जैसे कि महानदी, साबरमती नदी, नर्मदा नदी एवं मोरई नदी, भूखी नदी, खारी नदी, सॉर्गी नदी, कोरी नदी, चॉग नदी इत्यादी ''नदियो'' की तलहटियों में तथा कच्छ की सुखी नदियों के रेतों में व दबे पड़े कई मानव अवशेषों के सुरीले साज के तार भुगर्भ (Geology) की गोद में टूट–टूट कर बिखर गये। मोहेनजोदड़ो और हडप्पीय संस्कृति एवं धोलावीरा तथा कुरून और ध्रांग, देशलपुर, सुरकोटडा एवं शिकारपुर आदि की संस्कृतियों को प्रभावित करने वाला कच्छ–प्रदेश द्विप के बाबाजोड़ा, भूकम्प, तूफानों व अकाल तथा दुष्कान एवं सुखे बीहड–रण–प्रदेश और खड़ीरों से आच्छादित आदि के झंझा–झंकोर के भयंकर बेगों में सदा के लिए विलुप्त हो गया।'' जिनके अवशेष नखत्राणा तहसील के देसलपुर, ध्रॉग, लखपत तहसील के कोठारा के पश्चिम में टोडिया गॉव, पबुमठ, सुरकोटा, रंगपुर, कुरून, धोलावीरा, कानमेर आदि में देखने को मिलते हैं। डो. (प्रो.) चन्द्रिकासिंह सोमवंशी के शब्दो में ''कच्छ के ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक विरासतों का अध्ययन हमें आकाश द्विप की तरह, रास्ता भूले हुए लोगों को राह दिखाता है और मशाल की तरह जलकर पृथ्वी पर प्रकाश फैला कर यहॉ की आदिम्–संस्कृति एवं सभ्यता को उजागर करता है।''

भूगर्भशास्त्रीय भाषा में जिन्हें 'मिडलप्लेस्टोसीन' का समय कहा जाता है, उस काल में भी कच्छ में आदिम्–मानवों की बस्तियॉ थी, जिनके कच्छ में होने के अस्तित्व के प्रमाण भी मिलते है। इस आदिम्–मानव के अवशेष भुज शहर के आस–पास गुन्तली, माधापुर, कुकमा, ध्रॉग, कोटाय की तलहटियों, टोडिया, मोरई नदी के कगारों पर मिलते है। स्थानीय पत्थरों और खदानों (खानो) में से प्राप्त प्रागैतिहासिक एवं अद्यैतिहासिक हथियारों के अवशेष जो की पत्थर के हैं वे सम्पूर्ण कच्छ की पावन बेला में मिले हैं। कच्छ के भुस्तरीय विकाश–क्रम का इतिहास जो कि करोड़ो वर्ष पुराना है। अहमदाबाद के नजदीक 'प्यांगलाज' के पास मिला हुआ कच्छ प्रदेश का आदिम्–मानव के बस्ती के मानवी–औजारों के प्रमाण मिलें है। आज से लगभग 5000 (पॉच हजार) वर्ष पूर्व कच्छ का आदिम्–मानव खुद के औजारों के साथ पत्थरों के गढ़ता था, उनसे घास कोटता, एवं प्राथमिक कक्षा की खेती करता और जीवन आजीवीका के साधन जुटाता था। ऐसे कितने विकाश क्रम कस कडियों की प्रारम्भिक अवस्था आगे बढ़ा और वही से आदिम्–मानव की बस्ती के संकेत भी मिलते हैं। कच्छ की भौगोलिक बनावट कभी भी एक जैसी नही रही हैं। काफी उथल–पुथल होने के कारण से अब यदा–कदा ही ये अवशेष मिल पाते हैं। इसमें कोई आश्चर्य होने की बात नहीं, खोजने एवं उत्खनन कराने से क्या नहीं ढूँढा जा सकता। अभी हाल ही में रामायण काल के श्री हनुमानजी के पैर के निशान और सुमेर पर्बत तथा अशोक वाटिका (जिसमें सीता माता रहती थी) भी लंका में हनुमान जी हिमालय पर्वतमालाओं ने उत्तरी मानव–समूहों को भारत के भीतर आने से सदैव रोका है। बड़ी–बड़ी पर्वत–मालाओं, मरूस्थलों, एवं सागरों'–समुदों ने आदिम्–मानवों के आगे बढ़ने में काफी उडचने पैद की है। कुछ पूर्वी समूहों को छोड़कर भारत में अधिकांश प्रवास पश्चिमी भारत के महासागरों, महानदियों के तलहटियों से होता रहा है। यदि यह 'पर्वत–मालाऍ इतनी गहन न होती तो वर्तमान भारतीय मानव–समूह कुछ और ही होते। इसी प्रकार अफ्रिका में सहारा मरूस्थल तथा कांगो के भीषण बनों (जंगलो) ने सदैव ही एक प्रतिरोध उत्पन्न किया है तथा वहॉ पर अधिकांश प्रवास समुद्री तटों के किनारे–किनारे

होते रहे हैं। महाद्वि॰ के भीतर पश्चिमी वन–जन्तुओं का प्रवास भी सहारा के दक्षिण तथा कांगों के उत्तर के बीच की घासियारी–पट्टी तथा साधारण वनों के बीच से होता ही पूर्व की और आकर पुनःदक्षिण में फैला। सबसे प्रथम मानव जाति की उत्पति सर्व–प्रथम दक्षिणी अफ्रीका (South Africa) के धने जंगलो में हुआ, वहॉ से वह नदियों–सागरों के किनारे किनारे होता हुआ भारत वर्ष के पश्चिमी किनारे खास करके गुजरात के महानदी–साबरमती–नदी एवं कच्छ के धोलावीरा एवं मेतई नदी के किनारों पर आगमन हुआ। जिसके नर कंकाल उत्खनन में मिले हैं। आदिम्–मानवों से पूर्व हजारों वर्षो पूर्व तक पृथ्वी पर दानवाकार (दैत्याकार) भयानक जीवों की अपनी एक अलग ही दुनिया थी, शायद तब मानव का अभिर्भाव ही नहीं हुआ था। डायनासोर जैसे प्राणियों के कंकाल हमें यह बताते हैं कि पृथ्वी पर कैसे–कैसे विशाल जीवों की सृष्टी थी, और उन्ही के बीच में हीं मनुष्य का पूर्ववत् पूर्वज आदिम्–मानव प्रकृति की गोद में बैठकर उसके द्वार रची हुई दुनियॉ से अठखेलियॉ किया करता था। 19 करोड़ वर्ष पुराना डायनासोर के जीवाशम संशोधन–कारों की एक टुकडी (दल ने) 18 करोड वर्ष पुराना जिवाश्म ढूँढ निकाला है। आज तक सबसे पुराना जीवाश्म डायनासोर जैसे जंगली विशालकाय जानवर का मिला है ऐसा माना जाता है। मोरक्को के ऊर्जा एवं खानमंत्री मान्नी श्री मुहम्मद बाऊतालेबे ने बताया कि 30 (तीस) फुट लम्बा यह डायनासोर खुद की लम्बी–गरदन और पूँछ के कारण गेंडा जैसे आकार का लगता है। ये ऐटलस पर्वत के पास ताजोऊडा गॉव मे देखने को मिला था। श्री मुहम्मद बाऊतालेबे ने बताया कि यह विश्व का सबसे पुराना जीवश्म होने की जानकारी मिली है। अधिकारियों ने यह बताया कि इस डायनासोर के नाम जहॉ पर से यह प्राप्त हुआ है उस गॉव के नाम पर इसका नाम ''टाराऊडासारोर नाओकी'' रखा गया है। डायनासोर का शिर, जबडा और शरीर के कितन भाग को बाहर निकाला जा सकता है । आज से लगभग कई वर्ष पूर्व हमने सन्देश न्यूज पेपर (दैनिक अखबार) में पढ़ा था कि साउथ–अफ्रीका में सफेद हाथी उडते हुए पाये गये हैं, जिनके काफी लम्बे–लम्बे पंख थे। पौराणीक–गाथा में हमने पढ़ा कि देवराज इन्द्र के पास जी हाथी है वह सफेद रंग के है, किन्तु अखबारी न्यूज पढ़ कर दुविधा में डाल दिया। कुछ सालों पहले हमने कहीं पर यह पढ़ा था कि विहार के पहाड़ी इलाके में एक विशालकाय जानवर जो कि हाथी से भी विशाल प्राणी है उसका कंकाल मिला था। थोड़े समय पहले एक और दैनिक अखबार में पढ़ा था कि अलग–अलग थी। उस जीव की चमड़ी तीन इन्च से चार इन्च मोटी थी। ऐसे–ऐसे विचित्र प्राणियों के बीच में मनुष्य का पूर्वज आदिम्–मानव, जिनकी भुजाएँ शक्तिशाली थीं, गठिलां शरीर था एवं अठखेलियॉ करता था। प्रकृति की गोद में बैठ–बैठ वह प्रकृति के द्वारा दिये गये नजारों को ही देखा करता था। मानवशास्त्र भूगर्भशास्त्र के धुंधराले पलों के साथ आदिम्–मानव ऑख–मिचौली का खेल अन्य और प्राणियों के साथ खेला करता था। सभ्यता का दायिरा बढ़ता रहा और आदिम्–मानव धीरे–धीरे विकास के पथ पर बढ़ता रहा। सभ्यता किसान की कुटियां से निकल कर नगरों में फली–फूली। उसी तरह विकाश के पथ को छूता हुआ सभ्य मानव तक का एक लम्बा इतिहास तय किया। ''बची हुई हड़ियों को छीपा कर खाने वाला कुत्ता भविष्य में खाने के लिए जमा करने वाली गिलहरी, छतें में शहद दमा करके रखाने वाली मधु–मक्खी और बरसात के दिनों में काम आने के लिए खाने पीने की चीजे बटोर कर रखने वाली चिटियॉ ही सभ्यता की प्रथम रचियता हैं। कटफोडवा पक्षियों को पेडो की कोटरों में अनाज जमा करते हुए और मधु–मक्खियों को छत्ते में शहद जमा करते हुए देखकर मनुष्यने सोचा होगा कि यह सब भोजन के लिए ही आवश्यक होगा।'' आदिम्–युगीन मानव ने मानव का मॉस खाने और जानवरों का मॉस खाने के बीच कोई नैतिक अन्तर नहीं स्वीकार। मलेशिया नामक स्थान में उस सरदार का समाज की दृष्टी में बहुत ही अच्छा मान बढ़ता था जो अपने आये हुए प्रिये–मित्रो को मनुष्य के भूने हुए मॉस से स्वागत करता था।''

आदिम्–मानव के अवशेष जो कि प्रागैतिहासिक एवं आद्यैतिहासिक युग के हैं, गुजरात और कच्छ की महा–नदियों, जैसे कि महानदी, साबरमती नदी, नर्मदा नदी एवं मोरई नदी, भूंखी नदी, खारी नदी, सॉगी नदी, कोरी नदी, चॉग नदी इत्यादि ''नदियों'' की तलहटियों में तथा कच्छ की सूखी नदियों के रेतों में व दबे पड़े कई मानव अवशेष मानव की याद दिलाते हैं। ऐतिहासिक एवं भौगोलिक अवशेषों के सुरीले साज के तार भुगर्भ (Geology) की गोद में टूट–टूट कर बिखर गये। मोहेनजोदड़ो और हडप्पीय संस्कृति एवं धोलावीरा तथा कुरून और ध्रांग, देशलपुर, सुरकोटडा एवं शिकारपुर आदि की संस्कृतियों को प्रभावित करने वाला कच्छ–प्रदेश द्विप रण–प्रदेश और खड़ीरों से आंच्छादित आदि के झंझा–झंकोर के भयंकर बेगों में सदा के लिए विलुप्त हो गया।'' जिनके अवशेष नखत्राणा तहसील के देसलपुर, ध्रॉग, लखपत तहसील के कोठारा के पश्चिम में टोडिया गॉव, पबुमठ, सुरकोटडा, रंगपुर, कुरून, धोलवीरा, कानमेर आदि में देखने को मिलते हैं। डो. (प्रो.) चन्द्रिकासिंह सोमवंशी के शब्दो में ''कच्छ के ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक विरासतों का अध्ययन हमें आकाश द्वि॰ की तरह, रास्ता भूले हुए लोगों को राह दिखाता है और मशाल की तरह जलकर पृथ्वी पर प्रकाश फैला कर यहॉ की आदिम्–संस्कृति एवं सभ्यता को उजागर करता है।''

भूगर्भशास्त्रीय भाषा में जिन्हें 'मिडलप्लेस्टोसीन' का समय कहा जाता है, उस काल में भी कच्छ में आदिम्–मानवों की बस्तियॉ थी, जिनके कच्छ में होने के अस्तित्व के प्रमाण भी मिलते है। इस आदिम्–मानव के अवशेष भुज शहर के आस–पास गुन्तली, माधापुर, कुकमा, ध्रॉग, कोटाय की तलहटियों, टोडिया, मोरई नदी के कगारों पर मिलते हैं। स्थानीय पत्थरों और खदानों (खानो) में से प्राप्त प्रागैतिहासिक एवं अद्यैतिहासिक हथियारों के अवशेष जो कि पत्थर के हैं वे सम्पूर्ण कच्छ की पावन बेला में मिले हैं। कच्छ के भुस्तरीय विकाश–क्रम का इतिहास जो कि करोड़ो वर्ष पुराना है। अहमदाबाद के नजदीक 'प्यांगलाज' के पास मिला हुआ कच्छ प्रदेश का आदिम्–मानव के बस्ती के मानवी–औजारों के प्रमाण मिलें है। आज से लगभग 5000 (पॉच हजार) वर्ष पूर्व कच्छ का आदिम्–मानव खुद के औजारों के साथ पत्थरों को गढता था, उनसे घास कोटता, एवं प्राथमिक कक्षा की खेती करता और जीवन आजीवीका के साधन जुटाता था। ऐसे कितने विकाश क्रम कस कडियों की प्रारम्भिक अवस्था आगे बढ़ा और वही कम को धूता हुआ काम आदिम्–मानव आगे बढ़ा और वही से आदिम्–मानव की बस्ती के संकेत भी मिलते हैं। कच्छ की भौगोलिक बनावट कभी भी एक जैसी नहीं रही हैं। काफी उथल–पुथल होने के कारण से अब यदा–कदा ही ये अवशेष मिल पाते हैं। इसमें कोई आश्चर्य होने की बात नहीं, खोजने एवं उत्खनन कराने से क्या नहीं ढूँढा जा सकता। अभी हाल ही में रामायण काल के श्री हनुमानजी के पैर के निशान और सुमेर पर्बत तथा अशोक वाटिका (जिसमे सीता माता रहती थी) भी लंका में हनुमान जी प्राचीन से प्राचीन ग्रन्थ, चारों वेदों में से सबसे प्रथम ऋगवेद ग्रन्थ हैं। इसी में से ही सभी शास्त्रों की उत्पत्ति हुई है।

AVESETA
Linguistics
भाषा विज्ञान
पुरातत्वशास्त्र
Archaeology
भाषा विज्ञान
Natural History
ऋग्वेद
ज्योतिषशास्त्र
Astrology
प्रौद्योगिकी का
इतिहास
History of
Technology
Geomorphology
भूरचनाशास्त्र

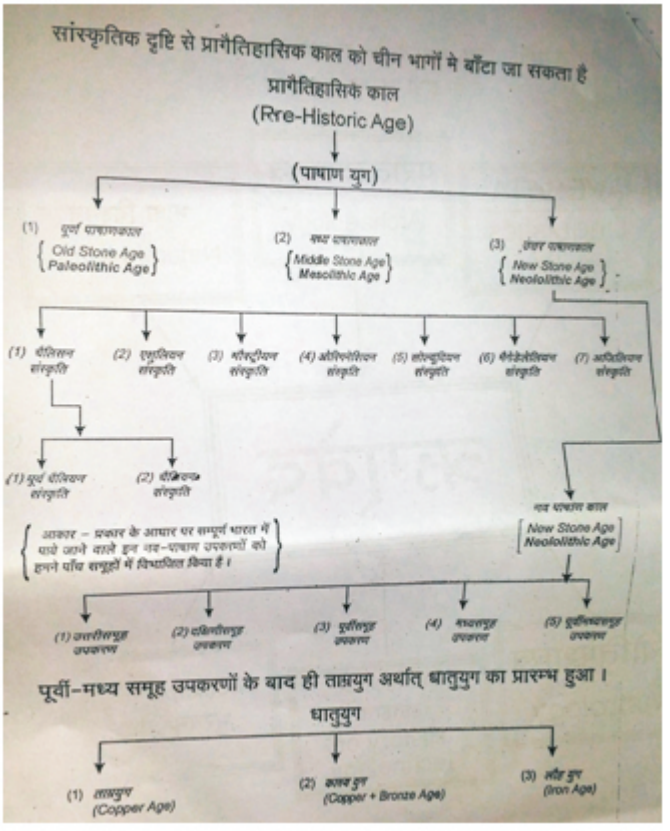
सांस्कृतिक दृष्टि से प्रागैतिहासिक काल को तीन भागों मे बाँटा जा सकता है
प्रागैतिहासिक काल
(Pre-Historic Age)
(पाषाण युग)
(1) पूर्व पाषाणकाल
Old Stone Age
Paleolithic Age
(2) मध्य पाषाणकाल
Middle Stone Age
Mesolithic Age
(3) उत्तर पाषाणकाल
New Stone Age
Neolithic Age
आकार – प्रकार के आधार पर सम्पूर्ण भारत में पाये जाने वाले इन नव–पाषाण उपकरणों को हमने पाँच समूहों में विभाजित किया है।
पूर्वी–मध्य समूह उपकरणों के बाद ही ताम्रयुग अर्थात् धातुयुग का प्रारम्भ हुआ।
धातुयुग
(1) ताम्रयुग
(Copper Age)
(2) कांस्य युग
(Copper + Bronze Age)
(3) लौह युग
(Iron Age)

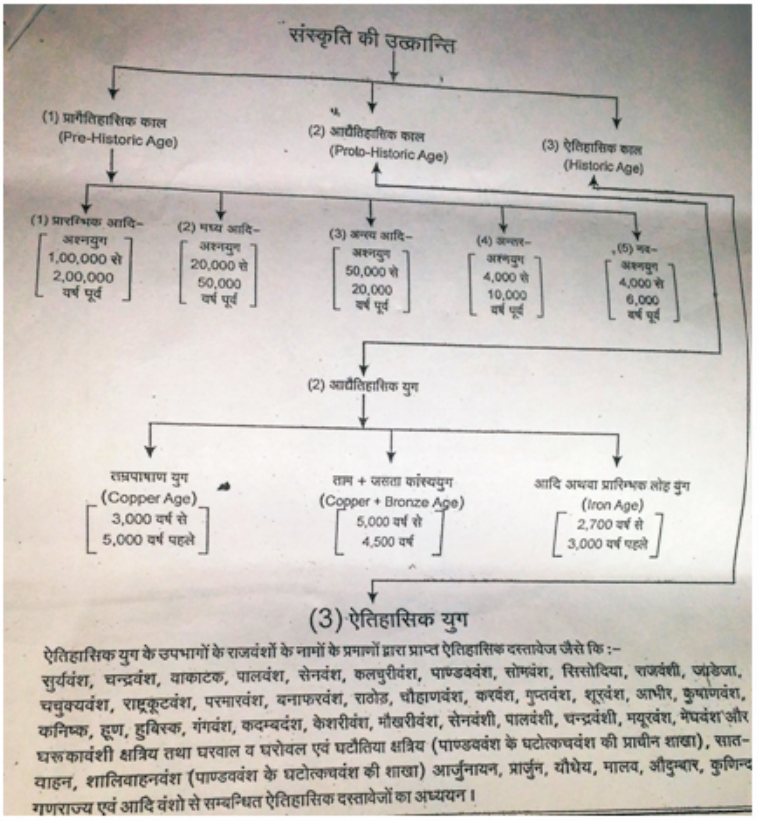
संस्कृति की उत्क्रान्ति
(1) प्रागैतिहासिक काल (Pre-Historic Age)
(2) आद्यैतिहासिक काल (Proto-Historic Age)
(3) ऐतिहासिक काल (Historic Age)
(1) प्रारम्भिक आदि– अश्मयुग 1,00,000 से 2,00,000 वर्ष पूर्व
(2) मध्य आदि– अश्मयुग 20,000 से 50,000 वर्ष पूर्व
(3) अन्त्य आदि– अश्मयुग 50,000 से 20,000 वर्ष पूर्व
(4) अन्तर– अश्मयुग 4,000 से 10,000 वर्ष पूर्व
(5) नव– अश्मयुग 4,000 से 6,000 वर्ष पूर्व
(2) आद्यैतिहासिक युग
ताम्रपाषाण युग (Copper Age) 3,000 वर्ष से 5,000 वर्ष पहले
ताम्र + जस्ता कांस्ययुग (Copper + Bronze Age) 5,000 वर्ष से 4,500 वर्ष
आदि अथवा प्रारम्भिक लोह युग (Iron Age) 2,700 वर्ष से 3,000 वर्ष पहले
(3) ऐतिहासिक युग
ऐतिहासिक युग के उपभागों के राजवंशों के नामों के प्रमाणों द्वारा प्राप्त ऐतिहासिक दस्तावेज जैसे कि :– सुर्यवंश, चन्द्रवंश, वाकाटक, पालवंश, सेनवंश, कलचुरीवंश, पाण्डववंश, सोमवंश, सिसोदिया, राजवंशी, जाडेजा, चचुक्यवंश, राष्ट्रकूटवंश, परमारवंश, बनाफरवंश, राठोड, चौहाणवंश, करवंश, गुप्तवंश, शूरवंश, आभीर, कुषाणवंश, कनिष्क, हूण, हुबिस्क, गंगवंश, कदम्बदंश, केशरीवंश, मौखरीवंश, सेनवंशी, पालवंशी, चन्द्रवंशी, मयूरवंश, मेघवंश और घरूकावंशी क्षत्रिय तथा घरवाल व घरोवल एवं घटोतिया क्षत्रिय (पाण्डववंश के घटोत्कचवंश की प्राचीन शाखा), सात–वाहन, शालिवाहनवंश (पाण्डववंश के घटोत्कचवंश की शाखा) आर्जुनायन, प्रार्जुन, यौधेय, मालव, औदुम्बार, कुणिन्द गणराज्य एवं आदि वंशो से सम्बन्धित ऐतिहासिक दस्तावेजों का अध्ययन।

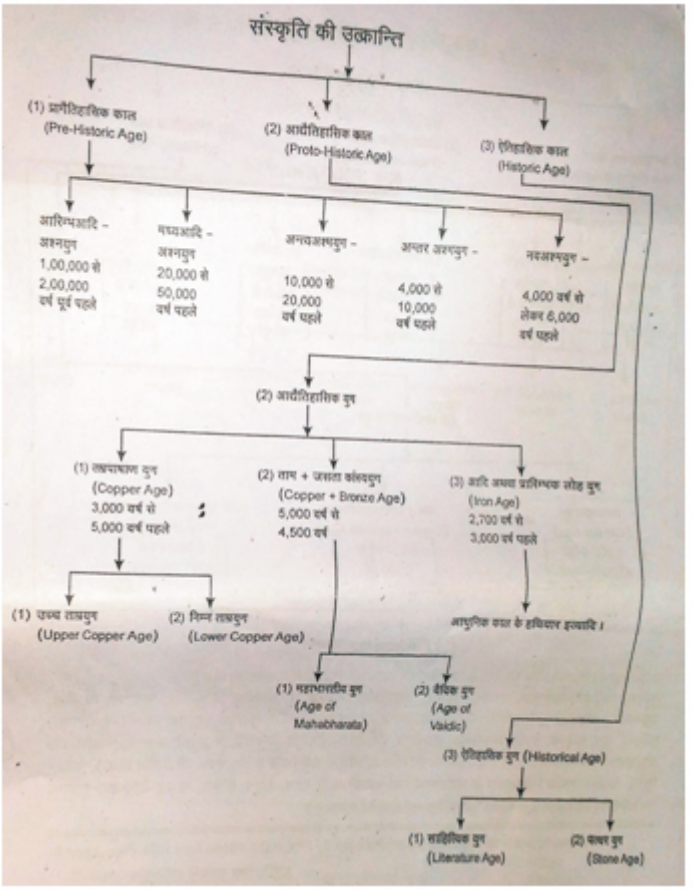
संस्कृति की उत्क्रान्ति
(1) प्रागैतिहासिक काल (Pre-Historic Age)
(2) आद्यैतिहासिक काल (Proto-Historic Age)
(3) ऐतिहासिक काल (Historic Age)
आरम्भआदि – अश्मयुग 1,00,000 से 2,00,000 वर्ष पूर्व पहले
मध्यआदि – अश्मयुग 20,000 से 50,000 वर्ष पहले
अन्यअश्मयुग – 10,000 से 20,000 वर्ष पहले
अन्तर अश्मयुग – 4,000 से 10,000 वर्ष पहले
नवअश्मयुग – 4,000 वर्ष से लेकर 6,000 वर्ष पहले
(2) आद्यैतिहासिक युग
(1) ताम्रपाषाण युग (Copper Age) 3,000 वर्ष से 5,000 वर्ष पहले
(2) ताम्र + जस्ता कांस्ययुग (Copper + Bronze Age) 5,000 वर्ष से 4,500 वर्ष
(3) आदि अथवा प्रारम्भिक लोह युग (Iron Age) 2,700 वर्ष से 3,000 वर्ष पहले
(1) उच्च ताम्रयुग (Upper Copper Age)
(2) निम्न ताम्रयुग (Lower Copper Age)
आधुनिक काल के हथियार इत्यादि।
(1) महाभारतीय युग (Age of Mahabharata)
(2) वैदिक युग (Age of Vaidic)
(3) ऐतिहासिक युग (Historical Age)
(1) साहित्यिक युग (Literature Age)
(2) पत्थर युग (Stone Age)

आदिम – मानव का बिकाशक्रम

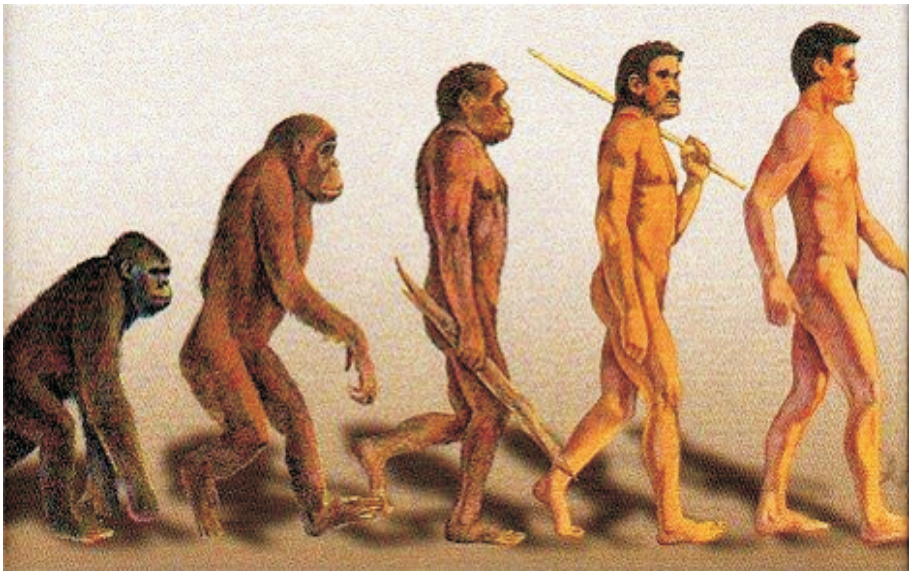

*आदिम – मानव की उत्तपत्ति सबसे पहले भारतवर्ष में ही हुआ था। 40,00,000 (चालीस लाख) से 23,00,000 (तेइस लाख) पहले आस्ट्रेलेपिक्स मानव वंश की उत्पत्ति हुई थी।*

### *संदर्भ ग्रन्थ*


१. अधिक विस्तार के साथ देखिए, डॉ. (प्रो) सोमवंशी चन्द्रिकासिंह का लेख "प्रागैतिहासिक संस्कृति एवं आदिम् – मानव", "कण्डाला–पत्रिका", गांधीधाम (कच्छ) १९९५

२. (अ) गुजरात नो इतिहास (गुजराती) ठल डॉ. हरिप्रसाद गंगा प्रसाद शास्त्री कृत. १९७३ई. पृ. १८, २८, (Ancient History of Gujarat) (ब) 'पथिक' By समादक डॉ. के का शास्त्री, मासिक जनरल, गु. यु. अहमदाबाद.

३. "संक्षिप्त रूप में कच्छ एक ऐतिहासिक एवं भौगोलिक अध्ययन" डॉ. (प्रो) सोमवंशी चन्द्रिकासिंह, रिसर्च स्कालर, यू.जी.सी. अनुदान पर तैयार किया गया, 'गाइनर रिसर्च प्रोजेक्ट – संख्या एक'

४. Catalogue of Pre-Historic Antiquities in the Government Museum, Madras (1971), Note on the Age and Distribution of Indian Pre-Historic Antiquities (1916). इन हथियारों का कर्नल ब्रुस पुट ने अच्छा अध्ययन किया है देखिए Pre-Historic India By श्री पन्चानन मित्र, कलकात्ता, 1913 and old chipped stones of India By श्री. ए. सी. लोगॅन, कलकत्ता 1906 and The Stone Age in India By श्री टी. एस. ऐयंगर, कृत Pre-Musalman India By श्री. बी. रंगाचार्य, खण्ड – पृ. २३४ पृ १२५, आदि–आदि ।

५. प्राचीन भारत का इतिहास By डॉ. रमाशंकर त्रिपाठी, कृत, एम, ए., पी. एच. डी. (लन्डन) पृ. ११ मोतीलाल बनारसीदार, बग्लो रोड, जवाहर नगर, दिल्ली– ११० ००६, छठवाँ संशोधित एवं परिवर्धित संस्करण १९९८ ई.

६. सं. क. ऐ. भौ. अ. "प्रागैतिहासिक एवं औद्यैतिहासिक युग" अध्यान देखिय।

७. मध्य प्रदेश के पुरातत्व की रूपरेखा (Introduction to Archaeological Remains in Madhya Pradesh) By डॉ. मोरेश्वर गं. दीक्षित., Ph.D., Page No. 3, न्यू ॲन्ड सेकडहँड बुक डीपो, 495 सरवर पेठ, पुणे– २.

८. वही, पृ. ६.

९. गु. प्रा. इति. पृ. २४ से २५ के बीच के चित्र देखिए।

१०. प्राचीन भारत का इतिहास By डॉ. रमाशंकर त्रिपाठी कृत, पृ. १२ से।

11. विस्तार के लिए देखिए --> डॉ. सी. एस. सोमवंशी का यू. जी. सी. के अनुदान पर तैयार की गयी 'कच्छ' के ऊपर 1999 से 2001 की रिपोर्ट–प्रोजेक्ट.

12. ''सन्देश'' दैनिक समाचार पत्र, (गुजराती), राजकोट से प्रकाशित ''दिनांक 9–6–2004'' ''कच्छ के अद्‌भुत हेरिटेज'' शिर्षक।

13. कच्छ लोक संस्कृति ठल डॉ. गोबर्द्धन शर्मा, डॉ. भावना मेहता, चित्रा प्रकाशन, पिलानी, राजस्थान 333, 031, शाखा :

14. गु. प्रा. इति., पृ. 22 और 24.

15. मध्य प्रदेश के पुरातत्प की रूपरेखा (Introduction to Archaeological Remains in Madhya Pradesh), सम् 1954 ई. का ऐडिशन देखिए। यह पुस्तक अपने आप में एक मिशाल है जो कि पुरातत्वशास्त्र की दृष्टि से सबसे सर्व श्रेष्ठ ग्रन्थ है।

16. कच्छ संस्कृतिः समस्या अने समाधान By राजरत्न गोस्वामी, M.A. (इतिहास) जूनागढ, 1882 ई. पृ. 84 से आगे, चित्र फलक नं. 4 देखिए।
17. वही, पृ. 84, चित्र फलक नं.
18. अखण्ड भारत में संस्कृति का उषाकाल ठल डॉ. हंसमुख धीरजलाल सांकालिया, पृ. 08 प्र. सं. डॉ. पृथ्वी कुमार अग्रवाल, पुरातत्व विभाग, काशी विश्वविद्यालय, से. पृथ्वी प्रकाशन, वाराणसी–221005 वी 1/54 अमेठी काठी, नगवा, वाराणसी 221005 पू., 1941 ई.?
19. कच्छ संस्कृति : समस्या और समाधान, पृ. 8।
20. ''प्रागैतिहासिक काल के आदिम–मानवो के प्रकार'' : लेखक : डॉ. (प्रो.) सी. एस. सोमवंशी, रिसर्च स्कॉलर, का रिसर्च पेपर देखिए।
21. पुरात्वशास्त्र By डॉ. जयन्त मेहता कृत।
22. (अ) ''डिस्कवरी चैनल'' पर दिखाया गया दिनॉक 7–6–2006 ई. सन्. दिन इतवार को, करीबन – करीबन 8 बजकर 5 मिनिट से लेकर रात के 10 बजे तक' ''नियण्डरथल मानव की खोज'' एक रिपार्ट देखिए?
22. (ब) डिस्कवरी चैनल पर दिखाया जा रहा प्रोग्राम, दिनॉक 4–9–2007, रात के 10 बजे।
23. Cultural Anthropology By Dr. Prof. Melville. J. Harskovits page] 32. (Physical Anthro&pology By Amercan Anturopological, Executive Board, 1947, Statement of Human Rights.)
24. कच्छ संस्कृति दर्शन By श्री रामसिह राठोड, कृत भुगर्भ अध्याय देखिए।
25. कच्छ संस्कृति : समस्या एव समाधान By राजरत्न गोस्वामी कृत, ृ28।
26. पुरात्वशास्त्र (Field Archaeology) By डॉ. (प्रा.) बैजनाथ पुरी कृत एम. ए. डि. लिट., डी. फिल (आक्सन), लखनऊ, पृ. 3,1992 ई. हमने नियण्डरथल मानवों के बारें में ऊपर विस्तार से वर्णन किया है, देखिए पूर्ववत् पृष्ठो में।
27. शारीरिक मानवशास्त्र By डॉ. (प्रो.) रिपुमदन सिंह, पृ. 281 से 282, हिन्दी ग्रन्थ अकादमी प्रयाग, ग्रन्थाड 163, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, राजर्षि पुरू षोत्तमदास टन्डन हिन्दी भवन, महात्मा गांधी मार्ग, लखनऊ–226001 प्रथम संस्करण 1974 ई. । Recent Discovery in Human Peilioanntology, Atlanthroups of Tarniline (Alzeeria) By द्वितीय संस्करण, 1984 ई. उारमबूर्ग सी. जे. 1955
28. ''गुजरात समाचार'' दैनिक न्यूज पेपर, राजकोट से प्रकाशित, (हिः स.) रात, (ता. 29–9–2003) प्रकाशित तारिख 30 सितम्बर 2003.
29. सभ्यता की कहानी By डॉ. सिल डूरेन्ट, (Oriental Haritage) खण्ड का हिन्दी, अनुवाद, पश्चिम और पश्चिमोशिया खण्ड का हिन्दी, अनुवाद, पश्चिम और पश्चिमोशिया खण्ड, ।Story of Civilization By Dr- Will Dorent, पृ. 8 से।
30. वही. पृ. 8 और आगे।
31. वही. पृ. 11 और आगे।
32. India T.V. दिनॉक 26–12–2007, शाम को 4:00 P.M. ''राम मिल गये'' प्रोग्राम दिखाया गया था।

# Publish Research Article
# International Level Multidisciplinary Research Journal
# For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

## Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium
- OPEN J-GATE

## Associated and Indexed,USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Golden Research Thoughts
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.aygrt.isrj.org